

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ अट्ठावन

दर्शन का अनावरण: दानिय्येल में शोक के दिनों को समझना

Jeff Pippenger

2024-03-25

फारस के राजा कूरेश के तीसरे वर्ष में दानिय्येल को, जिसका नाम बेल्लशज्जर कहलाता था, एक बात प्रकट की गई; और वह बात सच्ची थी, पर नियत समय लंबा था; और उसने उस बात को समझा, और उस दर्शन की समझ भी पाई। उन दिनों मैं दानिय्येल तीन पूरे सप्ताह शोक करता रहा। मैंने कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया, न मांस और न दाखरस मेरे मुंह में आए, न मैंने तन पर तेल लगाया, जब तक तीन पूरे सप्ताह पूरे न हो गए। और पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था जिसका नाम हिदैकेल है। दानिय्येल 10:1-4.

प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के प्रतीकात्मक साढ़े तीन दिनों में, जब दो गवाह सड़क पर मृत पड़े हैं, एक "वस्तु" बेल्लेशज्जर को प्रकट होती है। उसने पहले ही "दर्शन" (mareh) को समझ लिया था, क्योंकि नौवें अध्याय में गब्रिएल पहले ही आकर उसे उस दर्शन की समझ दे चुका था।

हाँ, जब मैं प्रार्थना में बोल ही रहा था, तभी स्वयं वही पुरुष गब्रिएल, जिसे मैंने आरम्भ में दर्शन में देखा था, शीघ्र उड़ता हुआ संध्या की भेंट के समय आकर मुझे छू गया। और उसने मुझे सूचित किया, और मुझसे बातें कीं, और कहा, हे दानिय्येल, मैं अब तुझे बुद्धि और समझ देने आया हूँ। तेरी विनितियों के आरम्भ ही में आज्ञा निकली, और मैं तुझे दिखाने आया हूँ, क्योंकि तू अत्यन्त प्रिय है; इसलिए उस विषय को समझ, और दर्शन पर विचार कर। दानिय्येल 9:21-23.

"पुरुष जिब्राएल, जिसे" दानिय्येल ने "आरम्भ की दर्शन में देखा था," यह "खाज़ोन" की ओर संकेत करता है—अर्थात् भविष्यवाणीपूर्ण इतिहास का दर्शन—जो इस तथ्य की ओर इंगित कर रहा था कि अध्याय आठ में जिब्राएल दानिय्येल के लिए बाइबिलीय भविष्यवाणी के राज्य-संबंधी दर्शन का अर्थ समझा रहा था। परन्तु "दर्शन," जिस पर दानिय्येल को तब अध्याय नौ में ध्यान देना था, वह "मारेह," अर्थात् प्रकट होने का दर्शन था। तब जिब्राएल दानिय्येल के लिए तेईस सौ वर्ष की भविष्यवाणी का ऐतिहासिक विभाजन प्रस्तुत करता है।

नवाँ अध्याय दारयवेश के पहले वर्ष में पूरा हुआ था। जब बेल्लशस्सर "कुरुश के तीसरे वर्ष" में यह कहता है कि उसे "दर्शन की समझ हो गई थी", तब उसे "mareh" दर्शन की समझ दो वर्षों से थी। शोक के "उन दिनों" में बेल्लशस्सर ने जो समझा, वह "बात"—अर्थात् इब्रानी शब्द "dabar"—थी, और वह लंबी थी, क्योंकि ठहराया गया समय पच्चीस सौ बीस वर्ष का था।

दानिय्येल उस 'विषय' का कुछ भाग पहले ही समझ चुका था, क्योंकि वह अध्याय नौ में लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस की प्रार्थना कर रहा था, और वही उस 'विषय' की प्रार्थना है। 'सात काल' पर बढ़ा हुआ प्रकाश, जिसे बेल्लशस्सर ने इक्कीस दिनों के शोक के दौरान समझा; और उन शोक के दिनों में 'सात काल' पर प्रकाश की वह वृद्धि, 1856 में 'सात काल' पर हुए बढ़े हुए प्रकाश का प्रतीक थी। मिलरवादी भी पहले से 'सात काल' के विषय को जानते थे, क्योंकि उन्होंने उसे घोषित किया था; परन्तु उस पर एक अतिरिक्त प्रकाश दिया गया, जो उनके इतिहास के उसी बिंदु पर उन्हें परखने वाला था, जब वे फिलाडेल्फिया आंदोलन से लाओदिकिया आंदोलन में परिवर्तित हो रहे थे।

बेल्लेशस्सर के शोक के दिन उस भविष्यवाणीगत इतिहास के समांतर हैं, जब फ़िलाडेल्फियाई आंदोलन 1856 में लाओदिकियाई आंदोलन में परिवर्तित हुआ, और फिर 1863 में लाओदिकियाई एडवेंटिस्ट कलीसिया में। "सात काल" पर बढ़े हुए प्रकाश से संबंधित बेल्लेशस्सर और मिलरवादी—दोनों के इतिहास—उस संक्रमण के साथ सामंजस्य रखते हैं, जिसमें तृतीय स्वर्गदूत का लाओदिकियाई आंदोलन एक लाख चवालीस हज़ार के फ़िलाडेल्फियाई आंदोलन की ओर बढ़ता है, और शोक के दिनों में, अर्थात् ठहरने के समय के दौरान, जब "सात काल" पर बढ़ा हुआ

प्रकाश प्रकट किया जाना था।

Belteshazzar एक दूत और एक आंदोलन दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। उसके शोक के दिनों में दूत को उस "बात" को समझना है, जो सत्य है, और तब उसे वह "बात" एक आंदोलन के सामने प्रस्तुत करना है, जब Michael 2023 में दो गवाहों को पुनर्जीवित करता है।

इब्रानी शब्द "mareh" (मसीह के स्वरूप का दर्शन), जिसे पहली आयत में दानिय्येल के समझने वाला बताया गया है, दानिय्येल के अंतिम दर्शन में चार बार प्रयुक्त हुआ है। दो बार इसका अनुवाद "दर्शन" और दो बार "रूप" किया गया है। पहली बार, जब दानिय्येल इस शब्द का प्रयोग पहली आयत में करता है, वह यह दर्शाता है कि वह उस "दर्शन" को समझ गया; परन्तु बाकी तीन संदर्भ यह दर्शाते हैं कि दानिय्येल स्वयं उस दर्शन का अनुभव कर रहा था। छठी आयत में, मसीह का मुख "बिजली के 'रूप' जैसा" था।

और पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था, जो हिदेकेल है; तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, और देखो, सन के वस्त्र पहने एक व्यक्ति था, जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी बेरिल के समान था, और उसका मुख बिजली की चमक जैसा था, और उसकी आँखें अग्नि के दीपकों के समान थीं, और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव मांजे हुए पीतल के रंग के समान थे, और उसके वचनों की आवाज़ भीड़ की आवाज़ के समान थी। और मैं, दानिय्येल, अकेला उस दर्शन को देख रहा था; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा; परन्तु उन पर बड़ा कंप पड़ गया, इसलिए वे छिपने को भागे। इसलिए मैं अकेला रह गया, और इस बड़े दर्शन को देखा, और मुझमें कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरी शोभा मेरे भीतर भ्रष्ट हो गई, और मुझमें कोई शक्ति न रही। दानिय्येल 10:4-8.

एक और हिब्रानी शब्द है जिसका अनुवाद "दर्शन" किया गया है, जिस पर हम हिब्रानी शब्द "mareh" की कुछ विशेषताएँ प्रस्तुत करने के बाद चर्चा करेंगे। पिछले पदों में "रूप" शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो हिब्रानी शब्द "mareh" है। वही शब्द पद सोलह में "दर्शन" के रूप में अनूदित है। पद सोलह में, मसीह के दर्शन ने दानियेल को दुखी कर दिया है।

और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान एक ने मेरे होठों को छुआ; तब मैंने अपना मुंह खोला और बोला, और अपने सामने जो खड़ा था उससे कहा, हे मेरे प्रभु, इस दर्शन के कारण मेरे दुःख मुझ पर आ पड़े हैं, और मुझ में कोई शक्ति शेष नहीं रही। दानिय्येल 10:16.

"sorrows" के रूप में अनूदित हिब्रू शब्द का अर्थ "कब्जा" होता है, और उस पद में दानिय्येल ने मसीह के प्रकट होने की जो "दृष्टि" देखी, उसने एक "कब्जे" को मोड़ दिया। भविष्यवाणी में "कब्जा" एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है।

अतीत के इतिहास से सीखें मिलती हैं; और इन पर ध्यान दिलाया जाता है, ताकि सब समझ लें कि परमेश्वर आज भी उसी रीति से कार्य करता है, जिस रीति से वह सदैव करता आया है। उसके कार्य में और राष्ट्रों के बीच उसका हाथ आज भी ठीक वैसे ही दिखाई देता है, जैसा कि तब से दिखाई देता आया है जब एदन में आदम को पहली बार सुसमाचार घोषित किया गया था।

ऐसे काल आते हैं जो राष्ट्रों और कलीसिया के इतिहास में निर्णायक मोड़ सिद्ध होते हैं। ईश्वरीय प्रबंध में, जब ये विभिन्न संकट आते हैं, तब उस समय के लिए प्रकाश दिया जाता है। यदि उसे ग्रहण किया जाता है, तो आध्यात्मिक उन्नति होती है; यदि उसे अस्वीकार किया जाता है, तो आध्यात्मिक अवनति और जहाज़ के डूब जाने जैसी तबाही आती है। प्रभु ने अपने वचन में सुसमाचार के आक्रामक कार्य को प्रकट किया है—जैसा कि वह अतीत में संचालित हुआ है, और भविष्य में भी होगा—यहाँ तक कि अंतिम संघर्ष तक, जब शैतानी शक्तियाँ अपना अंतिम अद्भुत कदम उठाएँगी। Bible Echo, 26 अगस्त, 1895.

सोलहवाँ पद उस इतिहास में एक निर्णायक मोड़ को दर्शाता है जिसका प्रतिनिधित्व बेल्तेशज्जर कर रहा है। यह गणतंत्रीय सींग (राष्ट्र) और प्रोटेस्टेंट सींग (कलीसिया) दोनों के लिए एक निर्णायक मोड़ है। यह एक संकट को प्रकट करता है, और यह उस बिंदु का भी प्रतिनिधित्व करता है जहाँ उस इतिहास के लिए विशेष ज्योति प्रदान की जाती है। दानिय्येल के लिए यह निर्णायक मोड़ तब आया जब उसे तीन बार में दूसरी बार “छुआ” गया। दानिय्येल को तीन बार छुआ जाना था, और दूसरी बार जब उसे छुआ गया, वही दानिय्येल के लिए एक निर्णायक मोड़ था; और वह निर्णायक मोड़ उन तीन अवसरों में दूसरा था जब दानिय्येल ने “मारेह” दर्शन को देखा।

और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान एक ने मेरे होठों को छुआ; तब मैंने अपना मुँह खोला और बोला, और अपने सामने जो खड़ा था उससे कहा, हे मेरे प्रभु, इस दर्शन के कारण मेरे दुःख मुझ पर आ पड़े हैं, और मुझ में कोई शक्ति शेष नहीं रही। दानिय्येल 10:16.

हम शीघ्र ही उन तीन स्पर्शों पर चर्चा करेंगे। चार अवसरों में पहली बार जब दानिय्येल ने "mareh" शब्द का प्रयोग किया, वह उसकी यह गवाही थी कि वह उस दर्शन को समझ गया था, और अंतिम तीन संदर्भ यह बताते हैं कि जब उसने वास्तव में उस रूप को देखा तो उसका अनुभव क्या था। तीसरी बार वह उस रूप के दर्शन का उल्लेख पद अठारह में करता है, जहाँ उसे तीसरी बार स्पर्श किया जाता है।

तब फिर एक जन, जो मनुष्य के समान दिखाई देता था, आया और उसने मुझे छू लिया, और उसने मुझे बल दिया। दानिय्येल 10:18।

दूसरे स्पर्श पर, पद सोलह में, जो “marah” दर्शन का दूसरा उल्लेख है, उसकी शक्ति जाती रहती है; परन्तु तीसरे स्पर्श पर उसकी शक्ति पुनः बहाल हो जाती है। पद दस, सोलह और अठारह में दानिय्येल को स्पर्श किया जाता है। पद छह में दानिय्येल मसीह के प्रकट होने का दर्शन करता है, और फिर जिब्राईल को देखता है; और पद दस में जिब्राईल पहली बार दानिय्येल को स्पर्श करता है।

तब मैं ने अपनी आँखें उठाकर देखा, और क्या देखता हूँ कि एक पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए था, जिसकी कटि ऊफाज के खरे सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी पुखराज के समान था, और उसका मुख बिजली के समान दिखाई देता था, और उसकी आँखें अग्नि के दीपकों के समान थीं, और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव चमकाए हुए पीतल के रंग के समान थे, और उसके वचनों का शब्द भीड़ के शब्द के समान था। और मैं, दानिय्येल, ने अकेले ही उस दर्शन को देखा; क्योंकि जो पुरुष मेरे संग थे, उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा; तौभी उन पर बड़ा थरथराहट छा गया, यहाँ तक कि वे अपने को छिपाने के लिये भाग गए। इस कारण मैं अकेला रह गया, और उस बड़े दर्शन को देखता रहा; और मुझ में कुछ भी बल न रहा; क्योंकि मेरी कान्ति बिगड़कर नष्टप्राय हो गई, और मुझ में बल न रहा।

तब मैं उसके वचनों का शब्द सुन रहा था; और जब मैंने उसके वचनों का शब्द सुना, तब मैं मुँह के बल भूमि की ओर मुख किए हुए गहरी नींद में था। और देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ, जिसने मुझे मेरे घुटनों और मेरे हाथों की हथेलियों के बल उठा दिया। और उसने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उन्हें समझ, और सीधा खड़ा हो जा; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मत डर; क्योंकि जिस पहिले दिन तूने समझ प्राप्त करने और अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करने के लिये अपना मन लगाया, उसी पहिले दिन से तेरी बातें सुन ली गईं, और मैं तेरी बातों के कारण आया हूँ। परन्तु फारस के राज्य के प्रधान ने इक्कीस दिन तक मेरा सामना किया; परन्तु देखो, मीकाएल, जो प्रधान सरदारों में से एक है, मेरी सहायता करने को आया; और मैं वहाँ फारस के राजाओं के पास ठहरा रहा। अब मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगी; क्योंकि यह दर्शन अभी बहुत दिनों के लिये है। दानिय्येल 10:5-14।

फिर पद सोलह में, दानियेल को दूसरी बार स्पर्श किया जाता है, जब वह मसीह का दर्शन देखता है।

और जब उसने मुझसे ऐसी बातें कहीं, तब मैंने अपना मुख भूमि की ओर कर लिया, और मैं गूँगा हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के सदृश एक ने मेरे होंठों को स्पर्श किया; तब मैंने अपना मुँह खोला, और बोलकर उसके सामने जो खड़ा था उससे कहा, हे मेरे प्रभु, इस दर्शन के कारण मुझ पर पीड़ाएँ आ पड़ी हैं, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। क्योंकि यह मेरा प्रभु का दास, इस मेरे प्रभु से कैसे बातें कर सकता है? क्योंकि जहाँ तक मेरा संबंध है, तुरन्त ही मुझ में कोई बल न रहा, और न मुझ में श्वास ही शेष रही। दानिय्येल 10:15-17.

तब दानिय्येल को तीसरी बार छुआ जाता है, गब्रिएल के प्रकट होने पर, मसीह के नहीं।

तब फिर एक, जो मनुष्य के समान दिखाई देता था, आकर मुझे छू गया और उसने मुझे बल दिया, और कहा, हे अत्यंत प्रिय पुरुष, मत डर; तुझ पर शांति हो; दृढ़ हो, हाँ, दृढ़ हो। और जब उसने मुझसे यह कहा, तो मुझे बल मिला, और मैंने कहा, मेरे स्वामी बोलें; क्योंकि आपने मुझे बल दिया है। तब उसने कहा, क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के प्रधान से लड़ने को लौट जाऊँगा; और जब मैं निकल जाऊँगा, तो देख, यूनान का प्रधान आएगा। परन्तु मैं तुझे वह बताऊँगा जो सत्य के ग्रंथ में लिखा है; और इन बातों में मेरा साथ देने वाला कोई नहीं है, केवल तुम्हारा प्रधान मीकाएल। दानिय्येल 10:18-21.

दानिय्येल को तीन बार छुआ गया, और पहली तथा तीसरी बार उसे स्वर्गदूत गब्रिएल ने छुआ। दूसरी बार उसे मसीह ने छुआ। दानिय्येल ने एक ही इब्रानी शब्द का चार बार प्रयोग किया, पर उन चार में से पहली बार, अर्थात् पहली आयत में, वह यह कह रहा था कि उसने "दर्शन" को समझ लिया था। किसी सत्य को समझना महत्वपूर्ण है, पर यह सत्य का अनुभव करने के समान नहीं है, जैसा कि उसने अन्य तीन बार किया।

जब दानिय्येल के शोक के दिन समाप्त हुए, तब उसे दर्शन का ऐसा अनुभव दिया गया जिसे वह अपने शोक के दिनों के समाप्त होने से पहले ही समझ चुका था। यह अनुभव तीन चरणों से बना था, जो तीन स्पर्शों द्वारा प्रदर्शित थे। पहला और अंतिम स्पर्श गब्रिएल द्वारा किया गया, और बीच का स्पर्श मसीह द्वारा। पहला और अंतिम स्पर्श हिब्रानी वर्णमाला के पहले और अंतिम अक्षर का प्रतीक थे। उस दूसरे चरण में, दानिय्येल अपने प्रभु के प्रति अपने आपको एक विद्रोही पापी के रूप में पहचानता है, और इसलिए मध्य स्पर्श विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि हिब्रानी वर्णमाला के तेरहवें अक्षर द्वारा दर्शाया गया है।

परन्तु अब पतरस को न नावों की सुध थी, न माल की। यह चमत्कार, अब तक देखे गए किसी भी अन्य चमत्कार से बढ़कर, उसके लिए दैवी सामर्थ्य का प्रकटीकरण था। यीशु में उसने ऐसे एक को देखा जो समस्त प्रकृति को अपने वश में रखता है। दैवत्व की उपस्थिति ने उसकी अपनी अपवित्रता को प्रकट कर दिया। अपने स्वामी के प्रति प्रेम, अपने ही अविश्वास के लिए लज्जा, मसीह के अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता, और सबसे बढ़कर, अनंत पवित्रता की उपस्थिति में अपनी अशुद्धता का बोध—इन सब ने उसे अभिभूत कर दिया। जब उसके साथी जाल की पकड़ को सुरक्षित कर रहे थे, पतरस उद्धारकर्ता के चरणों में गिर पड़ा और पुकार उठा, 'हे प्रभु, मुझसे दूर हो जाइए; क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।'

दैवीय पवित्रता की वही उपस्थिति थी, जिसके कारण भविष्यद्वक्ता दानिय्येल परमेश्वर के स्वर्गदूत के सामने मानो मृतक सा गिर पड़ा। उसने कहा, 'मेरी शोभा मुझमें भ्रष्ट हो गई, और मुझमें कोई शक्ति न रही।' इसी प्रकार, जब यशायाह ने प्रभु की महिमा देखी, तो वह पुकार उठा, 'हाय मुझ पर! क्योंकि मैं नाश हुआ जाता हूँ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ; क्योंकि मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा है।' दानिय्येल 10:8; यशायाह 6:5। मानवता, अपनी दुर्बलता और पाप सहित, देवत्व की सिद्धता के सामने रखी गई, और उसे अपने को सर्वथा अपर्याप्त और अपवित्र लगा। और जिन-जिन को परमेश्वर की महानता और महिमा का दर्शन दिया गया है, उनके साथ भी ऐसा ही हुआ है।

पतरस ने उद्गार किया, 'मुझसे दूर चले जाओ; क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ;' फिर भी वह यीशु के चरणों से लिपटा रहा, यह महसूस करते हुए कि वह उनसे अलग नहीं हो सकता। उद्धारकर्ता ने उत्तर दिया, 'भय न कर; अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा।' परमेश्वर की पवित्रता और अपनी अयोग्यता का दर्शन करने के बाद ही यशायाह को दैवीय

संदेश सौंपा गया। और पतरस को जब आत्म-त्याग और दैवी शक्ति पर निर्भरता तक ले जाया गया, तभी उसे मसीह के लिए अपने कार्य का बुलावा मिला। *The Desire of Ages*, 246.

“मारेह” दर्शन मसीह के प्रकट रूप का दर्शन है, परन्तु दानिय्येल द्वारा इस शब्द के दूसरे और चौथे प्रयोग में स्वर्गदूत गब्रिएल का निरूपण किया गया है। पहली बार यह कहा गया कि बेल्तशज्जर ने उस दर्शन को समझ लिया, परन्तु अंतिम तीनों प्रयोग दानिय्येल द्वारा उस दर्शन के अनुभव का संकेत करते हैं। जिन तीन अवसरों पर दानिय्येल उस दर्शन का अनुभव करता है, उन तीनों में उसे स्पर्श भी किया जाता है।

गैब्रियल ने उसे पहली बार तब छुआ जब उसने महिमामय मसीह का स्वरूप देखा था, और उस अनुभव ने उसे 'मैं मुख के बल गहरी निद्रा में पड़ गया, और मेरा मुख भूमि की ओर था' की अवस्था में छोड़ दिया। उस दर्शन ने अलगाव उत्पन्न किया था, क्योंकि जो उसके साथ थे 'उन्होंने वह दर्शन नहीं देखा; परंतु उन पर बड़ा कांपना छा गया, इसलिए वे अपने को छिपाने के लिए भाग गए।' पहली निराशा में, यिर्मयाह 'परमेश्वर के हाथ के कारण अकेला बैठा,' और बेल्तशस्सर में 'बल शेष न रहा,' 'क्योंकि' 'मेरी शोभा मेरे भीतर भ्रष्टता में बदल गई, और' 'मैं बल बनाए न रख सका।'

जैसे ही गैब्रियल ने पहली बार उसे छुआ, उसने दानिय्येल को घुटनों और हथेलियों के बल बैठा दिया। फिर उसने दानिय्येल को अपने कहे हुए वचनों को समझने और खड़ा होने की आज्ञा दी, और वह खड़ा हो गया, यद्यपि वह काँप रहा था। इसके बाद गैब्रियल ने दानिय्येल के शोक के इक्कीस दिनों में क्या-क्या हुआ, उसका विवरण दिया। उसने बताया कि वह इक्कीस दिनों तक फारस के राजाओं के साथ संघर्ष करता रहा; तब मीकाएल स्वर्ग से उतरकर उस युद्ध में शामिल हुआ, और फिर गैब्रियल दानिय्येल की प्रार्थनाओं का उत्तर देने तथा उसे यह समझाने आया कि “अंतिम दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा।” जब मीकाएल स्वर्ग से उतरा, तब दानिय्येल को अंतिम दिनों के विषय में समझाने के लिए गैब्रियल को भेजा गया।

गैब्रियल का स्पष्टीकरण दानिय्येल को इक्कीस दिनों के शोक के अंत में दिया गया था, जो कि प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के पंक्ति-दर-पंक्ति अनुप्रयोग में उस समय का प्रतिनिधित्व करता है जब यहजेकेल अध्याय सैंतीस में उसे मृत हड्डियों से दो बार भविष्यवाणी करने की आज्ञा दी जाती है, ताकि दो भविष्यवक्ताओं को उनकी कब्रों से उठाया जा सके। यह तब होता है जब मीकाएल स्वर्ग से उतरकर मूसा के शरीर को पुनर्जीवित करता है, जबकि यहूदा की पुस्तक में वह शैतान से संवाद करने से इंकार करता है। गैब्रियल द्वारा शोक के दिनों का अवलोकन दे दिए जाने के बाद भी दानिय्येल को अभी दो बार और छुआ जाना बाकी है।

जब गब्रिएल ने अपनी बात समाप्त की, तब दानिय्येल ने “अपना मुख भूमि की ओर किया, और वह गूंगा हो गया”; और फिर स्वयं मसीह ने दानिय्येल के “होंठों” को “छुआ”; तब दानिय्येल ने “अपना मुंह खोला, और बोला, और जो मेरे सामने खड़ा था उससे कहा, हे मेरे प्रभु, इस दर्शन के कारण मेरे दुःख मुझ पर फिर पड़े हैं, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। क्योंकि मेरा यह प्रभु का सेवक मेरे इस प्रभु से कैसे बात कर सकता है? क्योंकि जहाँ तक मेरा प्रश्न है, तुरंत ही मुझ में कोई बल न रहा, और न मुझ में प्राण ही शेष रहा।”

मसीह को देखना और उनसे बात करना—इस अनुभव ने दानिय्येल को धूल तक नम्र कर दिया। वह मौन हो गया, और यदि मसीह ने उसके होंठों को न छुआ होता तो वह मौन ही रहता—जैसे यशायाह के होंठ वेदी से लिए गए अंगारे से छुए गए थे।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जब यशायाह ने अपने प्रभु की महिमा और प्रताप के इस प्रकाशन को देखा, तो वह परमेश्वर की शुद्धता और पवित्रता की भावना से अभिभूत हो गया। उसके सृष्टिकर्ता की अतुलनीय परिपूर्णता और उन लोगों के पापमय जीवन के बीच कितना तीव्र विरोधाभास था, जो स्वयं उसके साथ इस्राएल और यहूदा की चुनी हुई प्रजा में लंबे समय से गिने जाते रहे थे! 'हाय, मुझ पर विपत्ति!' वह पुकार उठा; 'क्योंकि मैं तो नष्ट हो गया हूँ; क्योंकि मैं

अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठों वाली प्रजा के बीच रहता हूँ; क्योंकि मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा है।' पद 5. मानो वह भीतरी पवित्रस्थान में दिव्य उपस्थिति के पूर्ण प्रकाश में खड़ा था; उसे यह एहसास हुआ कि यदि उसे उसकी अपनी अपूर्णता और अयोग्यता पर छोड़ दिया जाए, तो जिस मिशन के लिए उसे बुलाया गया था, उसे वह सर्वथा पूरा न कर सकेगा। परंतु एक सेराफ़ उसकी व्यथा दूर करने और उसके महान मिशन के लिए उसे योग्य बनाने को भेजा गया। वेदी से लिया गया एक जलता हुआ अंगारा उसके होंठों पर रखा गया, और यह वचन कहा गया, 'देख, यह तेरे होंठों को छू गया है; और तेरा अधर्म दूर कर दिया गया है, और तेरा पाप शुद्ध कर दिया गया है।' तब परमेश्वर का स्वर सुनाई दिया, 'मैं किसे भेजूँ और हमारे लिए कौन जाएगा?' और यशायाह ने उत्तर दिया, 'देख, मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज।' पद 7, 8.

स्वर्गीय अभ्यागत ने प्रतीक्षारत दूत से कहा, 'जाओ, और इस प्रजा से कहो: तुम सुनते तो रहो, पर समझो नहीं; और देखते तो रहो, पर पहचानो नहीं। इस प्रजा का मन मोटा कर, उनके कान भारी कर दे, और उनकी आँखें मूढ़ दे; कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, अपने हृदय से समझें, और फिरें, और चंगे हो जाएँ।' पद 9, 10.

भविष्यद्वक्ता का कर्तव्य स्पष्ट था; उसे व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठानी थी। परंतु वह आशा के किसी आश्वासन के बिना यह कार्य हाथ में लेने से डरता था। 'प्रभु, कब तक?' उसने पूछा। पद 11. क्या तेरे चुने हुए लोगों में से कोई भी कभी समझेगा, पश्चाताप करेगा और चंगा होगा ही नहीं?

भटकते यहूदा के लिए उसकी आत्मा का बोझ व्यर्थ नहीं सहा जाएगा। उसका कार्य सर्वथा निष्फल न रहेगा। तथापि जो बुराइयाँ बहुत-सी पीढ़ियों से बढ़ती आई थीं, वे उसके दिनों में दूर नहीं की जा सकती थीं। अपने जीवन भर उसे धैर्यवान, साहसी शिक्षक—विनाश के साथ-साथ आशा का भी एक भविष्यद्वक्ता—बना रहना था। जब दिव्य उद्देश्य अंततः पूरा होगा, तब उसके प्रयत्नों का, और परमेश्वर के सब विश्वासयोग्य दूतों के परिश्रम का, पूर्ण फल प्रकट होगा। एक अवशेष बचाया जाएगा। यह घटित हो सके, इसलिए चेतावनी और विनती के संदेश उस विद्रोही राष्ट्र को सुनाए जाने थे; प्रभु ने घोषित किया: 'जब तक नगर निवासी रहित होकर उजाड़ न हो जाएँ, और घरों में कोई मनुष्य न रहे, और देश बिलकुल निर्जन न हो जाए, और यहोवा मनुष्यों को दूर न कर दे, और देश के बीच में बड़ा उजाड़ न हो।' पद 11, 12.

जो लोग पश्चाताप नहीं करते, उन पर टूट पड़ने वाले कठोर दंड - युद्ध, निर्वासन, अत्याचार, राष्ट्रों के बीच शक्ति और प्रतिष्ठा की हानि - ये सब इसलिए आने वाले थे कि जो लोग उनमें रुष्ट परमेश्वर का हाथ पहचानें, वे पश्चाताप करने को प्रेरित हों। उत्तरी राज्य की दसों जातियाँ शीघ्र ही राष्ट्रों के बीच तितर-बितर कर दी जानी थीं और उनके नगर उजाड़ छोड़ दिए जाने थे; विरोधी राष्ट्रों की विध्वंसकारी सेनाएँ बार-बार उनकी भूमि पर चढ़ाई करने वाली थीं; अंततः यरूशलेम भी गिरना था, और यहूदा को बंदी बनाकर ले जाया जाना था; तौभी प्रतिज्ञात भूमि सदा के लिए पूरी तरह परित्यक्त रहने वाली न थी। यशायाह के प्रति स्वर्गीय आगंतुक का आश्वासन यह था: 'उसमें दसवाँ भाग रहेगा, और वह लौट आएगा, और भक्षण किया जाएगा: जैसे तेरबिन्थ और बलूत, जिनका ढूँठ उनमें रहता है, जब वे अपने पत्ते गिराते हैं: वैसे ही उसका ढूँठ पवित्र बीज होगा।' पद 13.

"परमेश्वर के उद्देश्य की अंतिम पूर्ति के इस आश्वासन ने यशायाह के हृदय में साहस भर दिया। फिर चाहे सांसारिक शक्तियाँ यहूदा के विरुद्ध क्यों न पंक्तिबद्ध हो जाएँ! फिर चाहे प्रभु के दूत को विरोध और प्रतिरोध का सामना ही क्यों न करना पड़े! यशायाह ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा था; उसने सेराफ़ों का यह गीत सुना था, 'सम्पूर्ण पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है;' उसके पास यह प्रतिज्ञा थी कि विमुख यहूदा के लिए यहोवा के संदेशों के साथ पवित्र आत्मा की दोषी ठहराने वाली सामर्थ्य भी होगी; और भविष्यद्वक्ता अपने सामने के कार्य के लिए दृढ़ हो गया। पद 3। अपने दीर्घ और कठिन सेवा-कार्य के दौरान वह इस दर्शन की स्मृति अपने साथ लिए रहा। साठ वर्ष या उससे अधिक समय तक वह यहूदा के लोगों के सामने आशा के भविष्यद्वक्ता के रूप में खड़ा रहा, कलीसिया की भविष्य की विजय के विषय में अपनी भविष्यवाणियों में और भी अधिक निर्भीक होता गया।" भविष्यद्वक्ता और राजा, 307-310.